



अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर-272202

सुशील कुमार तिवारी
आचार्य एवं विशेष कार्याधिकारी
अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

मो०नं०: 9140318839,
9415245707
ईमेल: skt_gpu@yahoo.com

पत्रांक : मेमो / अ०बौ०के० / 11 / 2020

दिनांक 25.04.2020

प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति— मन की वृत्तियाँ हैं जिनके साथ हमारा तादात्म्य तब तक बना रहता है जब तक साक्षी भाव द्वारा वे विलीन नहीं हो जाती। साक्षी भाव के कारण हम यह जान जाते हैं कि **“वह मन है और यह मैं (अस्तित्व) हूँ।”** दोनों को जोड़ने वाला पुल अब वहाँ नहीं रहा। सामान्यतः हम इन्हीं वृत्तियों के साथ स्वयं को समझते हैं और मन के स्वामित्व में क्लेश, दुःख पाने को विवश रहते हैं लेकिन जैसे ही हम— अपने एवं वृत्तियों के मध्य साक्षी द्वारा एक दूरी बनाने में सफल होते हैं वैसे ही मन का स्वामित्व निषेधित हो जाता है और उसे उसकी वास्तविक स्थिति— सेवक की प्राप्ति हो जाती है और वह एक उपकरण— एक सशक्त उपकरण के रूप में अपने सही स्थान पर अवस्थित हो जाता है।

साक्षी भाव द्वारा तादात्म्य के टूटते ही हमें स्वयं की सर्वथा नवीन सत्ता का बोध होता है। यही वह अवसर होता है जब हमें अपनी वास्तविकता का बोध होता है। हमारे चतुर्दिक मन, शरीर— मनोशरीर की विभिन्न क्रियाएं होती रहती हैं। इस संरचना में हमारी अवस्थिति दो प्रकार से सम्भव है— प्रथम— हम यह मान लें कि हम यही तंत्र (**mechanism**) हैं, हमारी मनोदैहिक संरचना एवं उसकी क्रिया विधि के अतिरिक्त हम कुछ नहीं हैं— यही हमारा बंधन है, यही संसार है, यही दुःख है। द्वितीय— हम इस बात के प्रति सचेत रहे कि हम अपने मनोदैहिक संरचना एवं क्रियाविधि से भिन्न हैं और पृथकता के इस बोध से जब हम तंत्र का प्रयोग करते हैं तो सर्वथा नवीन आयाम हमारे समक्ष उद्घाटित होते हैं। किसी कारणवश यदि इस मनोदैहिक संरचना के किसी अंश में कोई विकृत आ जाती है तो उसे ठीक करने का भी प्रयास हो सकता चाहे वह समस्या शारीरिक हो या मानसिक लेकिन इससे हमारी चेतना निष्कम्प ही रहेगी, उसकी शांति भंग न होगी।

कोरोना द्वारा आज इसी मनोदैहिक तंत्र के दोनों पक्षों को चुनौती दिया जा रहा है— शारीरिक एवं मानसिक दोनों स्तरों पर। आज लोग घरों में रहने को विवश हैं, जिससे उनकी क्रियाशीलता तो प्रभावित हो ही रही है उसी के साथ उनके समक्ष जीविकोपार्जन की विकट समस्या भी उत्पन्न हो रही है। यह दोनों ही समस्याएं वस्तुनिष्ठ एवं वास्तविक हैं। ठीक वैसे ही जैसे— हमारी भूख, प्यास की



अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर-272202

सुशील कुमार तिवारी
आचार्य एवं विशेष कार्याधिकारी
अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

मो0नं0: 9140318839,
9415245707
ईमेल: skt_gpu@yahoo.com

समस्याएं होती हैं। वास्तविक समस्याओं का वास्तविक समाधान भी होना चाहिये लेकिन जब तक इनका अपेक्षित वास्तविक समाधान नहीं होता तब तक यदि हम इस बोध से थोड़ा बहुत ही युक्त रहेंगे कि हम एवं हमारी समस्याएं भिन्न हैं तो हम उनसे उस सीमा तक प्रभावित नहीं होंगे कि बाद में किसी भी कार्य के लिए ही अक्षम हो जाय। **साक्षी भाव से और कुछ हो या न हो लेकिन यह हमें किसी भी संकट को शांत चित्त से समझने एवं उसके समाधान का मार्ग अवश्य प्रशस्त कर सकता है।**

साक्षी भाव से हमारा मन समाप्त नहीं होता अपितु वह और भी ऊर्जावान तथा जीवंत हो जाता है क्योंकि वहां द्वंद्व न रह पाने के कारण जो ऊर्जा इसमें व्यय होती थी वह इसे उपलब्ध हो जायेगी, जिसका कहीं अच्छे ढंग से उपयोग सम्भव हो जाता है। **साक्षी भाव का यही निहितार्थ है कि हम स्वयं एवं स्वयं की शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं एवं अवस्था के मध्य पृथकता के प्रति सजग एवं सचेत रहे। हम किसी शारीरिक एवं मानसिक क्रिया को यंत्रवत कर सकते हैं या पूरे होशो हवास- जागरुकता के साथ। साक्षी की कोई भी क्रिया जागरुकता, पूर्ण सजगता के साथ सम्पादित क्रिया होती है।** सजगता के साथ सोचना सम्भव नहीं रहता इसीलिए जिस भी क्रिया में हम सजग रहते हैं उस क्षण हम केवल वही कर रहे होते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई मेरा यह आलेख पूरी सजगता से पढ़ रहा है तो उस समय वह सीधे मुझसे जुड़ा होगा और जो मैं सम्प्रेषित करना चाहता हूँ उसे पकड़ पाने में सफल होगा। लेकिन यदि पढ़ते समय वह इस पर सोचने का भी कार्य करेगा तो निश्चित ही वह, जो मैं कहना चाह रहा हूँ या कह रहा हूँ, को पकड़ नहीं पायेगा। यदि कोई सजगता से इसे पढ़ेगा तो जो यहां कहा जा रहा है वह सार्थक भी हो सकता है और निरर्थक भी लेकिन **सजगता से पढ़ना मात्र ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जायेगा**, क्योंकि यही सजगता पढ़ने वाले की चेतना को उन्नत आयाम, उच्च शिखर तक ले जा सकती है। साक्षी भाव हेतु **महत्वपूर्ण यह है कि हम जो भी करें- चाहे वह सफाई करने जैसा तथाकथित छोटा काम हो या किसी विद्वत सभा को सम्बोधित करने का कार्य; वह पूर्ण सजगता- पूरे होशो हवास में करें तो हमारी चेतना में निश्चित ही गुणात्मक परिवर्तन कुछ अवधि में दिखाई देगा** लेकिन इसके लिए हमें स्वयं के साथ प्रयोग करना पड़ेगा। सजगतापूर्ण क्रिया के माध्यम से न केवल हम दूसरों में बह सकते हैं बल्कि दूसरों को भी अपने में बहने देने की सुविधा देते हैं क्योंकि साक्षी से एकत्व की अनुभूति होती है।



अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर-272202

सुशील कुमार तिवारी
आचार्य एवं विशेष कार्याधिकारी
अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

मो0नं0: 9140318839,
9415245707
ईमेल: skt_gpu@yahoo.com

महान दार्शनिक कांट ने भी जब मानवीय ज्ञान के स्रोत, सीमा एवं वैधता के प्रश्न की विवेचना की तो वे इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि साक्षी भाव— सम्प्रत्यक्ष की अनुभवातीत एकता मानवीय ज्ञानात्मक संरचना की निष्पत्ति है। कांट ने कहा कि सभी मनुष्य बुद्धि की कोटियों के माध्यम से क्षणिक, आणविक, असम्बद्ध, विश्रृंखलित संवेदनाओं को सूत्रबद्ध करते हैं और अर्थ प्रदान करते हैं। हम सभी जिस रूप में यह संश्लेषण करते हैं वह सभी में भिन्न भिन्न नहीं होता— अर्थात् कोई व्यक्ति अपनी ज्ञानात्मक संरचना के आधार पर यह जान सकता है कि अगला व्यक्ति क्या कह रहा है? क्या चाहता है? क्योंकि **कोटियाँ (software) जिनके द्वारा इंद्रिय प्रदत्तों (data) का विश्लेषण कर उन्हें सार्थक विषय में परिणत किया जाता है— सभी में एक समान होती है। प्रेम, करुणा, घृणा, ईर्ष्या आदि को जानने का साफ्टवेयर सभी में एक ही होता है; इसी से किसी में इनकी पहचान आसानी से हो जाती है।**

तत्त्वमीमांसीय दृष्टि से मानव जीवन का विश्लेषण दो खण्डों में विभक्त करके किया जा सकता है प्रथम— सत्ता, अस्तित्व (**being**) एवं द्वितीय— उसका होना (**becoming**) जिसमें उसके समस्त कृत्यों को रखा जा सकता है। हमारा समस्त कृत्य परिधिगत होता है; हम जो करते हैं, ठीक है कुछ सीमा तक वह हमारी— करने वाले की सूचना दे सकते हैं लेकिन वह पूरी तरह से हमारा सर्वस्व— पूरा होना नहीं होता। हमारे कृत्य की तुलना सागर की सतह पर उठती लहरों से की जा सकती है; लहरे सागर की है लेकिन लहर, सागर नहीं है। यह सागर ही है, जो लहरों के रूप में लहराता है इसका बोध ही साक्षी भाव है। हमारा होना (**becoming**) निश्चित ही अस्तित्व (**being**) का होना है; इसकी अनुभूति ही साक्षी का स्वयं में स्थापित होना है। हम समस्त 'होने' के द्रष्टा, गवाह बन जाते हैं।

इसी के साथ हम जो जानते हैं वह प्रमाण— सम्यक ज्ञान होता है। प्रमाण को सम्यक ज्ञान के रूप में परिभाषित करने में वह पूरी बात नहीं आ पाती है जो प्रमाण का अभिधेय है, केवल एक हल्का सा संकेत मिलता है। पतंजलि के अनुसार मन की क्षमता जिसे यदि ठीक से विकसित किया जाय तब हम जो कुछ भी जानेगे वह स्वयं सिद्ध सत्य होगा। सामान्यतः हम इस क्षमता— प्रमाण, सम्यक ज्ञान या प्रज्ञा को विकसित नहीं करते इसलिए हम जो कुछ जानते हैं वह गलत ही होता है क्योंकि मन के पास एक अन्य क्षमता भी होती है जिससे असत ज्ञान, असम्यक ज्ञान प्राप्त होता है जिसे पतंजलि ने विपर्यय की



अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर-272202

सुशील कुमार तिवारी
आचार्य एवं विशेष कार्याधिकारी
अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र

मो0नं0: 9140318839,
9415245707
ईमेल: skt_gpu@yahoo.com

संज्ञा दी है। इसी के नाते हम वह जानने लगते, देखने लगते हैं, जो वहां होता ही नहीं। मन के इस केन्द्र- विपर्यय के कारण सभी कुछ जो जाना जाता है वह विकृत हो जाता है। सामान्यतः हम में यही आसानी से क्रियाशील रहता है क्योंकि हम एक तरह निद्रा, जिसे बुद्ध ने 'प्रमाद' कहा है, के प्रभाव में ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

'महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह नहीं है कि हम क्या जानते हैं बल्कि यह है कि हम कहां से जानते हैं।' रामकृष्ण परमहंस से जब भी पूछा जाता कि, "क्या ईश्वर है?" तो वे सदैव "हाँ" में उत्तर देते थे। यदि कोई ईश्वर को प्रमाणित करने का आग्रह करता तो वे यहीं कहते कि "मुझे इसे प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं इसे जानता हूँ। यदि तुम्हें इसकी आवश्यकता है तो तुम इसे खोजो क्योंकि किसी के लिए कोई भी इसे प्रमाणित नहीं कर सकता क्योंकि यह प्रत्यक्ष अनुभव का विषय है। रामकृष्ण का कथन उनके सही केन्द्र की क्रियाशीलता की निष्पत्ति है।

आइये हम सब कोरोना जन्य महामारी का विश्लेषण अपने सम्यक ज्ञान के केन्द्र से करें, प्रमाद से हट कर करें, क्योंकि तभी जो भी हमारा निष्कर्ष होगा वह सत्य एवं स्वयं सिद्ध होगा अन्यथा हम जो भी विश्लेषण करेंगे वह विकृत निष्कर्ष ही होगा जो हमें केवल भटकाएगा ही।

सुशील कुमार तिवारी
(विशेष कार्याधिकारी)
अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,
सिद्धार्थनगर।